शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

'मुझे पहचानो' : लांछित कुलदेवी और जीवित सती की दास्तान

डॉ. संजीव मंडल

शोध-सार :

संजीव का 'मुझे पहचानो' उपन्यास अमानवीय परंपराओं की क्रूरता और निरर्थकताओं पर गहरी चोट करता है। इसका मुख्य विषय सती दाह जैसी प्रथा की क्रूरता का चित्रण करते हुए उस पर व्यंग्य करना है। मध्यम कलेवर की यह रचना पाठकों को शोकमग्न कर देती है। साथ ही पाठकों को लोगों की संवेदनाशून्यता से रूबरू करा कर उन्हें संवेदनशील बनाती है। कथा का केंद्र है कंठा रियासत। रियासत के बीच से बहती कुँआरी नदी। यहाँ राय साहब और लाल साहब दो सौतले भाइयों का राज चलता है। दोनों झूठी शान की जिंदगी बीता रहे हैं। कथानायक मनोज और उसका दोस्त दुबे क्रमश: लाल साहब और राय साहब के मैनेजर के तौर पर काम करते हैं। दोनों पर भार है मालिकों की आमदनी बढ़ाने का। लाल साहब और राय साहब दोनों चुनाव लड़ना चाहते हैं। इसके लिए डोनेशन के तौर पर राजनीतिक पार्टियों को मोटी रकम देने की जरूरत है। यह मोटी रकम की व्यवस्था करने का दायित्व मैनेजरों पर छोड़कर वे अपनी झूठी शान की जिंदगी जीतते रहते हैं। मनोज को रियासत में आकर कुलदेवी कुँआरी और सती बना दी गई सावित्री की बात पता चलती है। मनोज दोनों के बारे में जानने के लिए रियासत के जानकार और बुजुर्ग लोगों के पास जाता है। और तब खुलती है पूरी कहानी। जिस कुँआरी के भले कर्मों को देखकर रियासत का हर व्यक्ति उसे कुलदेवी की तरह पूजता है, उसी कुँआरी ने अपने पुत्र और पुत्रवधू की अवमानना का शिकार होकर आत्महत्या की। राय साहब के छोटे भाई की मृत्यु पर उसकी पत्नी सावित्री को सती किया गया। पर वह किसी तरह बच गई। उपन्यास में कुलदेवी कुँआरी और सती सावित्री की कहानी आकर्षण के प्रमुख कारण हैं। साथ ही रत्नों की पट्टी पर बसे कंठा रियासत में रत्नों की तलाश में पागल हो गये लोगों की कहानी भी यह उपन्यास कहता है।

बीज-शब्द : *कुलदेवी, सती, लाल साहब, राय साहब, झूठी शान, रियासत*